International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 335-341

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

अवनीश कुमार सिंह*
डॉ. निर्मला राठौर**

प्रस्तावना

मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है। शिक्षा वह प्रकास है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यत्मिक शक्तियों का विकास होता है। शिक्षा व्यक्ति के विकास एवं ज्ञानार्जन का आधार मानी जाती है। जन्म के समय मानव शिशु असहाय तथा असामाजिक होता है। जन्म के बाद पूर्ण रूप से वह माता पर निर्भर होता है, और फिर परिवार पर। शिक्षा के बिना बालक न तो सामाजिक बनता है और न व्यवहारिक ही। जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है वैसे–वैसे वह अपने वातावरण से अनुकूलन करना सीखता है। जीवन के कार्यों को करने में शिक्षा उसे विशेष योगदान देती है। शिक्षा न केवल व्यक्ति को अपने वातावरण से अनुकूलन करने में सहायता देती है वरन् उसके व्यवहार में ऐसे वांछनीय परिवर्तन भी करती है कि वह अपना और अपने समाज का कल्याण करने में सफल होता है। शिक्षा के सम्बन्ध में डॉ. राधाकृष्णन ने लिखा है कि ''शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए इस कार्य को किए बिना शिक्षा अनुर्वर और अपूर्ण है।''[1]

शिक्षा एक शक्तिशाली हथियार है जिसका प्रयोग व्यक्तियों की सामाजिक, आर्थिक और मानसिक निर्धनता को समाप्त कर उन्हें समृद्ध बनाने के लिए होता हैं। शिक्षा का एक उद्देश्य व्यक्ति को समाज की परिवर्तित आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलित करना है। मानव एक सामाजिक प्राणी है तथा व्यक्ति का प्रथम समाज उसका अपना घर ही होता है जहाँ व्यवहार करना सीखता है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सीखने में उनके सामाजिक परिपक्वता व समायोजन स्तर का अत्यधिक महत्व है। विद्यालय वातावरण एवं पारिवारिक वातावरण बालक में सामाजिक परिपक्वता विकसित करने में सहायक हो सकता है। हमारे देश की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है अतः हमें शहरी क्षेत्र के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्र के बालको पर भी ध्यान देना होगा। बालक को जन्म के पश्चात् लैसा सामाजिक वातावरण मिलता है बालक के व्यक्तित्व का विकास वैसा ही होता है। अपने विशिष्ठ व्यक्तित्व के आधार पर वह समाज में समायोजन स्थापित करता है, उसका समायोजन जितना अच्छा होता है वह समाज में उतना ही अधिक सामाजिक रूप से परिपक्व एवं सफल माना जाता है।

सामाजिक परिपक्वता

बालक का शारीरिक विकास और मानसिक विकास की स्वाभाविक और पूर्ण अवस्था परिपक्वता है। परिपक्वता एक स्वाभाविक क्रिया है जिसके लिए बाह्य उत्तेजनाओं की आवश्यकता नहीं पड़ती है। अधिगम में बाह्य उत्तेजनाओं की आवश्यकता होती है और प्रयत्न भी करने पड़ते हैं।

* शोधछात्र, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।
** प्रोफेसर, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।

[1] पी. डी. पाठक, शिक्षा मनोविज्ञान, पृ. सं. 4।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है किन्तु हमें यह अर्थ नहीं लगा लेना चाहिए कि व्यक्ति जन्म से ही सामाजिक गुणों से सुशोभित होता है। वास्तविकता तो यह है कि जन्म के समय बालक न तो सामाजिक होता है और न असामाजिक बल्कि वह समाज–निर्पेक्ष होता है। वह सामाजिक प्राणी इसलिए है कि जन्म से ही उसकी आवश्यकताएँ तथा स्वभाव ऐसा होता है कि वह बिना समाज के अपना अस्तित्व बनाये नहीं रह सकता। जन्म के समय बालक इतना निस्हाय और पराश्रित होता है कि वह अपनी एक भी आवश्यकता की पूर्ति स्वयं नहीं कर सकता। आवश्यकता की पूर्ति के अभाव में उसके जीवन का अस्तित्व कैसे संभव हो सकता है। वह समाज ही है जो जन्म से मृत्युपर्यंत उसकी आवश्यकता की पूर्ति करता है। सामाजिक परिपक्वता से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा बालक सामाजिक परम्पराओं और रूढ़ियों के अनुसार व्यवहार करता है तथा अन्य लोगों से सहयोग करना सीखता है जिसे बालक का सामाजिकरण भी कहा जाता है। **हरलॉक** का कहना है कि ''सामाजिक विकास का अर्थ सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता को प्राप्त करना है।''

सामाजिक परिपक्वता का एक अन्य घटक है कि सामाजिक परिस्थितियों का भाँप कर तदनुरूप उसके प्रति प्रतिक्रिया करना। सामाजिक परिपक्वता विकास एक बहुमुखी प्रक्रिया है इसमें कई पक्षों का समावेश होता है। विकास के क्रम मे बालक का बौद्धिक पक्ष ही नहीं शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। विकास के यह सभी पक्ष परस्पर एक दूसरे के सम्यक हैं। परिपक्वता की ओर अग्रसर और विकास करता हुआ बालक न केवल शारीरिक बौद्धिक और संवेगात्मक व्यवहार में बल्कि सामाजिक रूप से भी उन्नति करता है। सामाजिक विकास के फलस्वरूप उसे सामाजिकता की थाती प्राप्त होती है। समाजिकता व्यक्ति के व्यवहार को सकारात्मक एवं नकारात्मक स्वीकृती के साथ अदल–बदल कर प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। जो कुछ चीजों को स्वीकृत एवं कुछ अन्य चीजों की अस्वीकृत को आगे ले जाती है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व पर सामाजिक समूह, औपचारिकता, अनौपचारिकता के प्रभाव को महत्व देता है

समायोजन

समायोजन समायोजन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। जीवित अवयव साधारण से जटिल अवस्था में निरन्तर समायोजन का प्रयास करता है। इस समायोजन का सम्बन्ध प्राणिशास्त्रीय आवश्यकताओं जैसे–भूख तथा प्यास की संतुष्टि से सम्बन्धित होता है अथवा मानवीय स्तर पर मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं जैसे– सम्बन्ध स्थापना की इच्छा, प्रेम तथा वात्सल्य प्राप्त करने की इच्छा या रचनात्मक आत्म प्रदर्शन के अवसर प्राप्त करने की इच्छा पूर्ति से होता है। समायोजित व्यक्ति सामाजिक परिस्थितियों तथा दशाओं को पर्यावरण में इस प्रकार समायोजित करने का प्रयत्न करते हैं जिससे क्रियाओं के प्रतिदिन के कार्यक्रम सरलता से चल सकें। समायोजन को सामंजस्य, व्यवस्थापन या अनुकूलन भी कहते हैं। समायोजन दो शब्दों को मिलाकर बना है–सम और आयोजन। सम का अर्थ है भली–भाँति, अच्छी तरह या समान रूप से और आयोजन का अर्थ है व्यवस्था अर्थात् अच्छी तरह व्यवस्था करना। अतएव समायोजन का अर्थ हुआ सुव्यवस्था या अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकतायें पूरी हो जायें, मानसिक द्वन्द्व न उत्पन्न होने पायें। अनेक आवश्यकताएँ ही व्यक्ति को लक्ष्य की प्राप्ति की ओर प्रेरित करती हैं। जब व्यक्ति को अपने लक्ष्य की प्राप्ति सरलता से हो जाती है तो उसे संतोष का अनुभव होता है नहीं तो, उसे निराशा एवं असंतोष की अनुभूति होती है।

शेफर के अनुसार– ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओं एवं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के साथ सन्तुलन बनाये रखता है।''

व्यक्ति का वर्तमान और भविष्य का जीवन सुखी एवं आनंदमय तभी हो सकता है, जब उसका व्यवहार समायोजित हो। बाह्य एवं आंतरिक वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने में समर्थ व्यक्ति जीवन में सदैव सफलता प्राप्त करते हैं। प्रत्येक परिस्थिति में स्वयं को स्थिर, संतुलित रखने वाला व्यक्ति सुसमायोजित होता है। वह दूसरो के साथ सहानुभूति रखता है। अपनी परिस्थिति का तिरस्कार नहीं करता। उसके विचार, भाव, प्रतिक्रिया और व्यवहार एक सामान्य व्यक्ति के अनुभव होते हैं। वह केवल अपनी समस्याओं पर ही ध्यान केन्द्रित नहीं करता। उसका सामाजिक दायरा भी विस्तृत होता है।

शोध समस्या का औचित्य

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। शिक्षा की दृष्टि से सामाजिक परिपक्वता एवं समायोजन शैक्षिक उपलब्धि के लए महत्वपूर्ण है। मनुष्य जन्म से कोरे कागज की तरह उत्पन्न होता है। सम्बद्ध परिवार व सामाजिक वातावरण से ही वह प्रभाव ग्रहण करता है, और आयु के साथ–साथ तदनुरूप सामाजिक परिपक्वता को विकसित करता है। आज का बालक सादा सरल व संयमी जीवन व्यतीत करने के बजाय बाहरी दिखावे में रहना ज्यादा पसन्द करता है इससे उनकी सामाजिकता एवं समायोजन क्षमता में समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। पारिवारिक सम्बन्धों का बालक के मन–मस्तिष्क पर सीधा प्रभाव पड़ता है यदि माता–पिता में आपसी सामन्जस्य ठीक है तो बालक में वही संस्कार बढ़ते जायेंगे, और यदि पारिवारिक सम्बन्ध ठीक नहीं है तो बालक के सामाजिक गुणों एवं समायोजन में गिरावट आयेगी। पूर्व के शोध निष्कर्षों के आधार पर यह सिद्ध हुआ है कि बलक जितना सामाजिक रूप परिपक्व होगा वह अपने जीवन में उतना ही समायोजित होगा। यदि बालक सुसमायोजित है तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च स्तर की होनी चाहिए।

शोध समस्या

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन''

शोध कार्य के उद्देश्य

- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन करना।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का समायोजन स्तर व शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिक्वता व समायोजन स्तर में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं होता है।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिक्वता व शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं होता है।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन स्तर व शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं होता है।

अध्ययन के चर

भटनागर आर.पी. व मीनाक्षी –"चर का अर्थ होता है एक ऐसा तत्व, परिस्थिति, विशेषता अथवा गुण जिसका मापन विभिन्न मात्राओं में किया जा सके, जिसके एक से अधिक माप सम्भव हो सके।"

- **स्वतंत्र चर**
  - ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी।

- **आश्रित चर**
  - सामाजिक परिपक्वता
  - समायोजन
  - शैक्षिक उपलब्धि

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत अध्ययन में सम्भाव्य न्यादर्श के आधार पर अलवर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय के विद्यार्थी 800							
ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी 400				शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी 400			
ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी 200		ग्रामीण क्षेत्र के गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी 200		शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी 200		शहरी क्षेत्र के गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी 200	
छात्र 100	छात्रा 100	छात्र 100	छात्रा 100	छात्र 100	छात्रा 100	छात्र 100	छात्रा 100

शोध अध्ययन का परिसीमांकन

- प्रस्तुत अनुसंधान राजस्थान प्रदेश के अलवर जिले तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत अनुसंधान में अलवर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अनुसंधान में केवल कक्षा 12 के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत केवल 800 विद्यार्थियों को लिया गया है।

शोध उपकरण

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में, सामाजिक परिपक्वता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के परीक्षण लिये है। इस शोध के अन्तर्गत निम्नलिखित परीक्षणों का चयन किया गया है –

- विद्यार्थियों के गतवर्ष के परीक्षा प्राप्तांकों के प्रतिशत के आधार पर **"उपलब्धि परीक्षण।"**
- विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता मापन हेतु डॉ. आर. पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व मानकीकृत **सामाजिक परिपक्वता मापनी** Social Maturity Scale (SMS), परीक्षण लिया जायेगा।
- समायोजन परीक्षण करने के लिये **डॉ. ए.के.पी. सिन्हा व डॉ. आर.पी. सिंह** का **'समायोजन मापनी'** परीक्षण लिया जायेगा।

दत्त विश्लेषण

सारणी 1: ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (MEAN)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अंतर	टी –मान (T- Value)	सार्थकता के 0.05 स्तर पर
ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों	400	65.67	13.742	3.533	3.239	अस्वीकृत
शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों	400	62.13	16.943			

(डी.एफ 798 पर टी का सारणी मान .05 स्तर पर 1.96 एवं 0.01 स्तर पर 2.59)

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिक्वता में सार्थक अन्तर पाया गया है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिक्वता शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पायी गयी।

सारणी 2: ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (MEAN)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अंतर	टी –मान (T- Value)	सार्थकता के 0.05 स्तर पर
ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों	400	53.30	17.945	4.105	3.711	अस्वीकृत
शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों	400	57.40	12.936			

(डी.एफ 798 पर टी का सारणी मान .05 स्तर पर 1.96 एवं 0.01 स्तर पर 2.59)

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया है। शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों का समायोजन ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाया गया।

सारणी 3: ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (MEAN)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अंतर	टी –मान (T- Value)	सार्थकता के 0.05 स्तर पर
ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थी	400	65.81	14.023	1.637	1.643	स्वीकृत
शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थी	400	67.45	14.167			

(डी.एफ 798 पर टी का सारणी मान .05 स्तर पर 1.96 एवं 0.01 स्तर पर 2.59)

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

सारणी 4: ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता व समायोजन स्तर में सह–सम्बन्ध

क्र. सं.	मापित चर	विद्यार्थियों की संख्या	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	निष्कर्ष
1	**सामाजिक परिक्वता**	800	.191''	सार्थक सह–सम्बन्ध है
2	समायोजन	800		

स्वतन्त्रता के अंश (df) = 800, .05 = 0.062, .01 = 0.081

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिक्वता व समायोजन स्तर मे अतिनिम्न धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

निष्कर्षतः ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के जिन विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता स्तर उच्च पाया गया उन विद्यार्थियों का समायोजन स्तर उच्च पाया गया।

सारणी 5: ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिक्वता व शैक्षिक उपलब्धि में सह–सम्बन्ध

क्र. सं.	मापित चर	विद्यार्थियों की संख्या	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	निष्कर्ष
1	सामाजिक परिक्वता	800	.112''	सार्थक सह–सम्बन्ध है
2	शैक्षिक उपलब्धि	800		

स्वतन्त्रता के अंश (df) = 800, .05 = 0.062, .01 = 0.081

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिक्वता व शैक्षिक उपलब्धि मे अतिनिम्न धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

निष्कर्षतः ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के जिन विद्यार्थियों में सामाजिक परिपक्वता स्तर उच्च पाया गया उन विद्यार्थियों का समायोजन स्तर भी उच्च पाया गया।

सारणी 6: ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन स्तर व शैक्षिक उपलब्धि में सह–सम्बन्ध

क्र. सं.	मापित चर	विद्यार्थियों की संख्या	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	निष्कर्ष
1	समायोजन	800	.153''	सार्थक सह–सम्बन्ध है
2	शैक्षिक उपलब्धि	800		

स्वतन्त्रता के अंश (df) = 800, .05 = 0.062, .01 = 0.081

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिक्वता व शैक्षिक उपलब्धि मे अतिनिम्न धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

निष्कर्षतः ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों में समायोजन स्तर उच्च पाया गया उन विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि स्तर भी उच्च पाया गया।

शोध में उद्देश्यों के अनुसार विश्लेषण करने पर प्राप्त निष्कर्ष

- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन किया गया अध्ययन में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर पाया गया।

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिक्वता शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पायी गयी।

ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिक्वता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन किया गया अध्ययन में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया।

शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों का समायोजन ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाया गया।

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन स्तर के घटक सांवैगिक में सार्थक अन्तर पाया गया है। शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों का समायोजन ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाया गया।

ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन स्तर के घटक सामाजिक में सार्थक अन्तर पाया गया है। शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों का समायोजन ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाया गया।

3. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया अध्ययन में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शहरी क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय की छात्राओं की तुलना में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी।

शैक्षिक निहितार्थ

शोधकर्ता ने अपने शोध के परिणामों के आधार पर अनुभव किया कि किशोरावस्था के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धियों में सहयोग प्राप्त हो सकता है। इस हेतु कुछ बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए।

विद्यार्थी समाज का अंग है। बालक की सामाजिक परिपक्वता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि जॉचने व समझनें की आवश्यकता प्रायः दैनिक जीवन में महसूस की जाती हैं। अतः आवश्यक है कि विद्यार्थियों के समायोजन का प्रबन्धन एवं शैक्षिक उपलब्धि हेतु प्रस्तुत शोध अध्ययन अत्यंत उपयोगी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, विनोद कुमार (1994). ''शिक्षा और राजनीति'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. अग्रवाल, जे.सी., (2005) शैक्षिक तकनीकी प्रबन्ध एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. अरोडा, रीता एवं मारवाह, सुदेश, (2007). शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, चौड़ा रास्ता, जयपुर, शिक्षा प्रकाशन।
4. भटनागर, चांद तथा राय, पारसनाथ,: (1977) "अनुसंधान परिचय", एल.एन. अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।
5. पाठक, पी.डी, : (2007) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. पाठक, पी. डी. (1994) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. पाण्डेय, आर.एस., : (2007) "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
8. राय, पारसनाथ : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल अस्पताल रोड़, आगरा।
9. शर्मा, आर. ए., : (2009) 'शिक्षा अनुसंधान', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
10. शर्मा, आर.ए. एवं चतुर्वेदि, शिखा (2013): "शिक्षा मनोविज्ञान के दार्शनिक आधार" आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
11. श्रीवास्तव डी.एस. एवं प्रीति (2014): "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

❖◆❖